

Chapter 14

Question: How can we progress in this world?

Krishnamurti: Does progress in this world consist mainly in being somebody socially or climbing the ladder of success? Why do we want to progress in this world? Why do we want to become more clever, more learned, more powerful? More money, a bigger house, means to us progress; that is why we all want more. We all want to keep on climbing, don't we, not only in this world but spiritually, inwardly. We have to see the truth of this thing, that this so-called progress, outward or inward, does not bring tranquillity and peace but only leads to wars, to destruction, to greater misery. We do not understand ourselves, the ways of our own existence, and so we are enamoured of this progress—the progress of the airplane, the very latest car, the astonishing things the inventors are producing. These things have their own uses, but unless we change ourselves, we use these things in a manner which causes destruction and misery.

Question: At every meeting, you tell us to have a discussion with the teachers for at least ten minutes in the morning, but many of our teachers do not come to the meetings. So what are we to do in order to have a discussion?

Krishnamurti: If most of them do not come to the meetings, ask the others who do come. When you attend the class, you must have a teacher there. Why don't you ask him? Why don't you say, 'Please, before we start our classes, let us

प्रश्न : संसार में रहते हुए हम प्रगति कैसे कर सकते हैं?

कृष्णमूर्ति : समाज में कोई विशिष्ट व्यक्ति होना या सफलता की सीढ़ियां चढ़ते चले जाना ही क्या संसार में रहकर प्रगति करने का प्रमुख पैमाना है? हम इस संसार में प्रगति करना क्यों चाहते हैं? हम अधिक चतुर, अधिक विद्वान, या अधिक शक्तिशाली होना क्यों चाहते हैं? अधिक धनवान होना या बड़ा मकान होना ही हमारी दृष्टि में प्रगति का सूचक होता है और इसलिए हम सभी और अधिक प्राप्त करना चाहते हैं। हम सभी ऊंचे ही ऊंचे चढ़ना चाहते हैं और सिर्फ इस संसार में ही नहीं बल्कि अपने अंतर्मन के स्तर पर, आध्यात्मिक रूप से भी हम ऐसा चाहते हैं। इस सत्य को हमें देखना होगा कि यह तथाकथित प्रगति जो चाहे बाहरी स्तर की हो या आंतरिक हो, मौन एवं शांति नहीं लाती बल्कि केवल युद्धों की ओर, विनाश की ओर, और भी बड़ी विपत्तियों की ओर ही ले जाती है। हम अपने आपको, अपने अस्तित्व के तौर-तरीकों को नहीं समझते हैं और इसलिए हम इस प्रगति से मोहित हैं—हवाई जहाज की प्रगति, आधुनिकतम कार और आविष्कारकों द्वारा आविष्कृत अद्भुत वस्तुएं हमें इसीलिए आकर्षित करती हैं। यद्यपि इन सबका भी अपना महत्त्व होता है लेकिन जब तक हम अपने आपको रूपांतरित नहीं कर लेते तब तक हम इन चीजों का प्रयोग इस ढंग से करते रहते हैं जिससे विध्वंस और क्लेश ही पैदा होता है।

प्रश्न : आप अपनी प्रत्येक वार्ता में हमसे कहते हैं कि हम प्रतिदिन सुबह कम-से-कम दस मिनट तक शिक्षकों से विभिन्न बातों पर चर्चा किया करें किंतु हमारे बहुत से शिक्षक इन सभाओं में नहीं आते हैं। तो उनसे चर्चा करने के लिए हम क्या करें?

कृष्णमूर्ति : यदि उनमें से ज्यादातर यहां नहीं भी आते हैं तो जो आते हैं उनसे आप अनुरोध कर सकते हैं। जब आपकी कक्षा लगती है तो वहां कोई न कोई शिक्षक तो होंगे ही। आप उनसे क्यों नहीं कहते? आप उनसे ऐसा क्यों नहीं कहते, 'हमारी पढ़ाई शुरू हो इससे पहले कृपया सुबह की सभा में जो कुछ कहा गया उस पर

Chapter 14

talk about what was said at the morning meeting.' But, I think the question is a little more difficult. Because, the teachers, when you ask them to discuss with you before the classes begin, get rather annoyed, don't they? They do not want to be questioned about these matters because they do not quite understand. They do not want to feel that they do not understand. They are teachers, you know, they are superior people, and you are only the students. So they want to keep you in your place. You, being impudent, want to catch them out. So it works both ways, does it not?

I think it is important for the teachers as well as for the students to listen to these talks and to discuss them together. What I am talking about is life; this is not just a fancy, a belief, a religion, a sect. This is life, and if the teachers do not understand it, then naturally they cannot help the students to understand. If the students want to discuss with them, why should they get angry or annoyed or disturbed? If they begin to think, they also will see the problems; then they will find a way of talking about them. But unfortunately, most of our teachers are not interested in all this. They have their own problems, they have their jobs, they are well established, and they want you to leave them alone. The young mind, the mind of the student, wants to know, to find out, to inquire, to disturb the teacher. That is why you, the older people, should pay attention to what is being said because, in your hands, a new generation can come into being. If you are not interested in all these things, you are going to produce a

चर्चा कीजिए।' किंतु मुझे लग रहा है कि प्रश्न थोड़ा और भी कठिन है। क्योंकि कक्षा में पढ़ाई शुरू हो इससे पहले किन्हीं बातों पर चर्चा करने के आपके अनुरोध से आपके शिक्षक नाराज़ हो जाते होंगे--ऐसा ही होता है न? वे इस तरह के प्रश्न पूछा जाना पसंद नहीं करते क्योंकि इन विषयों में शायद वे भी अधिक कुछ नहीं समझते। और वे यह महसूस करना भी नापसंद करते हैं कि वे नहीं समझ पाते। वे शिक्षक हैं, आप जानते हैं कि वे बड़े हैं और आप तो बस विद्यार्थी हैं। अतः वे चाहते हैं कि आप विद्यार्थी की ही हैसियत से रहें। और आप यह सच्चाई कि वे नहीं जानते हैं, उन पर प्रकट करके उन्हें लज्जित करने की ढिठाई करना चाहते हैं। इसलिए चर्चा न हो पाने के लिए आप और आपके शिक्षक दोनों ही ज़िम्मेदार हैं। क्या ऐसा नहीं है?

मैं समझता हूँ कि शिक्षकों के साथ-साथ छात्रों के लिए भी यह महत्त्वपूर्ण है कि इन वार्ताओं को सुनें और मिलजुलकर इस पर विचार-विमर्श करें। मैं जीवन के बारे में बोल रहा हूँ, यह कोई सनक नहीं है या विश्वास, धर्म अथवा संप्रदाय की बात नहीं है। यह जीवन के बारे में है, और यदि शिक्षक इसे नहीं समझते तो इसे समझने में छात्रों की मदद वे नहीं कर सकते हैं। यदि छात्र उनसे इस पर चर्चा करना चाहते हैं तो इसमें नाराज़ अथवा क्षुब्ध या विचलित होने की क्या वजह है? यदि वे सोच-विचार करेंगे तो वे भी समस्याओं को देख पाएंगे, और उन पर चर्चा करने का मौका उन्हें प्राप्त हो सकेगा। परंतु खेद की बात है कि हमारे अधिकांश शिक्षकों की इस सबमें दिलचस्पी नहीं है। उनकी अपनी समस्याएँ हैं, उनकी नौकरियाँ हैं, वे समाज में एक सुविधापूर्ण स्थान पा चुके हैं, और वे चाहते हैं कि आप उन्हें तंग न करें। नौजवानों का मन, छात्रों का मन जिज्ञासु होता है, वह पता लगाना चाहता है, जांच-पड़ताल करना चाहता है, शिक्षक को शांत नहीं बैठने देना चाहता है। और इसलिए आप बड़े लोगों को चाहिए कि जो कुछ कहा जा रहा है उस पर ध्यान दें, क्योंकि नयी पीढ़ी को आगे लाने की ज़िम्मेदारी आपके ही हाथों में है। यदि आप लोगों की इन सब बातों में रुचि नहीं है तो आप अपने जैसी ही एक और अभिशप्त पीढ़ी तैयार कर लेंगे। यदि आप अपने बच्चों को अपने ढंग की शिक्षा देने का

Chapter 14

generation as cursed as your own. You are really producing a curse on the land if you insist on educating your children according to your own pattern. The pattern of the older generation is nothing to be proud of. It is really important that the older people, the teachers, should inquire into all this.

Question: What is self-confidence and how does it come into being in man?

Krishnamurti: Sir, you dig a hole in the garden, manure it, water it, and then put a plant in and watch it grow. You feel that you can at least do something, don't you? So you dig another hole, plant another tree, and that gives you a sense that you can do things, that gives you a confidence, as when you pass examinations one after the other. The capacity to do anything, to plant, to drive a car, to write a book, to pass examinations, gives you a sense of confidence, does it not? When you write a poem without effort, often you say, 'By Jove! I can do it very easily.' It gives you a sense of confidence. But, what happens? That confidence becomes a way of self-importance, 'I can do things.' So, when you use your capacity, you begin to have self-importance. That is, if I am able to speak well on a platform, which may be my sole capacity, I use the platform for my importance, as a means of expanding myself. Or I may be able to perform some dance, and that gives me enormous self-importance because I show myself off. So, I use capacity as a means of giving strength to my subtle, inward forms of selfishness.

आग्रह रखते हैं तो आप इस धरती के लिए एक अभिशाप हैं। पुरानी पीढ़ी जिस सांचे में ढली है उसमें ऐसा कुछ भी नहीं है जिस पर गौरव किया जा सके। यह बात सचमुच महत्त्वपूर्ण है कि पुराने लोग, शिक्षकगण इस सबके बारे में खोजबीन करें।

प्रश्न : आत्मविश्वास किसे कहते हैं और मनुष्य में यह कैसे जागृत होता है?

कृष्णमूर्ति : आप बगीचे में एक गड्ढा खोदते हैं, उसमें खाद डालते हैं, पानी डालते हैं और फिर एक पौधा लगाकर उसे बढ़ता हुआ देखते हैं। आपको महसूस होता है कि आप कम-से-कम यह काम तो अवश्य कर सकते हैं, है न? अतः आप एक और गड्ढा खोदते हैं, एक पौधा और लगाते हैं और महसूस करते हैं कि आप भी बहुत कुछ कर सकते हैं, उससे आपमें एक विश्वास आता है, उसी प्रकार विश्वास आता है जैसे एक के बाद एक परीक्षाएं उत्तीर्ण करने से आया करता है। कुछ कर सकने के सामर्थ्य से, पौधे लगाने, कार चलाने, किताब लिखने, परीक्षाएं पास करने आदि से आपमें स्वयं पर एक भरोसा आने लगता है, आता है न? जब आप बिना प्रयत्न किए ही कोई कविता रच लेते हैं तो प्रायः आपके मुंह से निकलता है, 'अरे वाह, यह करना तो मेरे लिए बहुत आसान है।' इससे आपमें विश्वास की भावना जागती है। परंतु आगे जाकर क्या होता है? वही विश्वास आत्म-गौरव का रूप ले लिया करता है, 'मैं बहुत सी चीजें करने में सक्षम हूँ'। इसलिए जब आप अपनी क्षमताओं को उपयोग में लाते हैं तो आपमें आत्म-गौरव आने लगता है। तात्पर्य यह कि मैं मंच पर खड़ा होकर अच्छी तरह से भाषण दे सकता हूँ--जो कि मेरी एकमात्र क्षमता है, तो मैं मंच का इस्तेमाल अपना महत्त्व बढ़ाने के लिए करने लगता हूँ, अपने आपको विस्तार देने के लिए करने लगता हूँ। या मान लीजिए, मुझमें नृत्य करने की क्षमता है, और उसके माध्यम से मुझे बहुत आत्म-गौरव महसूस होता है क्योंकि इस प्रकार अपनी क्षमता का इस्तेमाल मैं एक ऐसे साधन के रूप में करने लगता हूँ जो मेरे भीतर सूक्ष्म रूप में मौजूद स्वार्थ भावना को

Chapter 14

पुष्ट कर सके।

What is important is to have the capacity to do things without the strengthening of the self. You understand? When you write a poem, when you plant a tree, do not say, 'I have written a poem, I have planted a tree.' It requires a great deal of intelligence to see that and to stop using capacity—however great or little it may be—for self-expansion, for making oneself important.

Question: As a boy grows, he becomes curious about sex. Why is it so?

Krishnamurti: It is a natural thing. Are you not curious about how trees grow? Have you not seen that the cows have calves? Everything is curious. How a little plant grows, becomes a tree, and produces fruit—is that not astonishing? Please listen carefully.

We do not use this interest to find out in every direction. You understand? You never inquire why a tree grows, why a bird flies. You never see the beauty of the bird and the shades of the tree. You never dig in the garden, and you never plant a tree, a bush; you never smell a flower, you never breathe the air with enjoyment; you never create anything with your own hands. Because you are not interested in all these things creatively, you become interested in one thing which you call sex, but if you are interested in all these things, then that also is a part of your life, that also is a natural thing. It is nature's way of producing babies, there is nothing wrong about it, but that should not become our occupation;

होना तो यह चाहिए कि स्व को शक्तिशाली बनाए बिना ही चीज़ों को कर पाने की क्षमता हममें विकसित हो। आप समझ पा रहे हैं न? जब आप कोई कविता लिखें या कोई पौधा लगाएं तो ऐसा न कहें, 'मैंने कविता लिखी, मैंने पौधा लगाया'। इसे देख सकने के लिए, और छोटी-से-छोटी, या बड़ी-से-बड़ी क्षमता का इस्तेमाल भी स्व-विस्तार के लिए, अपना महत्त्व बढ़ाने हेतु न करने के लिए बहुत अधिक प्रज्ञा की ज़रूरत होती है।

प्रश्न : जब कोई लड़का बड़ा हो जाता है तो उसके मन में सेक्स के बारे में उत्सुकता जागृत होने लगती है। ऐसा क्यों होता है?

कृष्णमूर्ति : यह नैसर्गिक बात है। पेड़-पौधे कैसे बढ़ते हैं-- क्या इसमें आप उत्सुक नहीं होते? क्या आपने गायों के साथ उनके बछड़े नहीं देखे हैं? जीवन की हर चीज़ विस्मयजनक है। एक नन्हा सा पौधा कैसे पैदा होता है बढ़कर एक वृक्ष बन जाता है और फिर फल देता है--क्या आश्चर्यचकित नहीं कर देता? कृपया ध्यान देकर सुनें।

हम इस रुचि का प्रयोग जीवन की हर दिशा में खोजबीन के लिए नहीं करते। आप समझ रहे हैं? आप कभी यह खोजने का प्रयत्न नहीं करते कि कोई वृक्ष बढ़ता क्यों है, पक्षी उड़ता क्यों है। आप कभी पक्षी की सुंदरता को और वृक्ष की छायाओं को नहीं देखते। आप कभी बगीचे में जाकर गड्ढा नहीं खोदते, आप वहां कोई पौधा या झाड़ी नहीं लगाते, आप कभी किसी फूल को अपने भीतर तक महसूस नहीं करते, आप अपने हाथों से कभी कोई चीज़ निर्मित नहीं करते। चूंकि इन सारी चीज़ों में आपकी सृजनात्मक रुचि नहीं हुआ करती, इसलिए आप उस एकमात्र चीज़ में रुचि लेने लगते हैं जिसे सेक्स कहा जाता है, परंतु यदि आप इन विविध चीज़ों में रुचि ले सकें तो वह भी जीवन का एक अंग हो जाता है, वह भी एक नैसर्गिक चीज़ होता है। यह प्रकृति का एक तरीका है जिससे वह बच्चों की उत्पत्ति करती है, इसमें गलत कुछ नहीं है, परंतु वह हमारी आदत बन जाए यह ठीक नहीं

Chapter 14

our mind should not be completely concentrated on that, as most of our minds are.

When we are young, if we have not taken interest in the flowers, in the rivers, in the fish, in creating something with our hands, then that thing, sex, becomes more important. If we can be creatively interested in everything—in painting, in music, to play an instrument, to write a poem, to play games, to eat right food, to put on the right clothes, to see the sky of an evening and early morning, see the beauty of the trees, our mind taking in all that, creatively enjoying, seeing the beauty of it all, which is, after all, education—then sex is not an ugly problem. But because we have not been encouraged to look at all these things creatively, this thing sex becomes a nightmare.

I do hope the elder people are listening. After all, that is education—to help the students to plant trees and care for them, to let them make things with their hands, milk the cows, go for walks—not always everlastingly playing games. To look at the trees, the birds, the skies, to widen the mind creatively, extensively—that is education, not the passing of some stupid and silly examinations.

Question: When we see girls we try to show ourselves off. Why is it?

Krishnamurti: I have answered that question. We are attracted to what we call the opposite sex, the opposite person, the girl; that is a normal thing, not to be ashamed of, not to be condemned. When you

है, हमारा मन पूरी तरह उसमें ही केंद्रित होकर न रह जाए, जैसा कि हममें से अधिकतर लोगों का मन होता है।

जब हम छोटे होते हैं तब यदि हमने फूलों में, नदियों में, मछलियों में, अपने हाथों से कुछ बनाने में रुचि न ली हो तब सेक्स अधिक महत्त्वपूर्ण बन जाता है। यदि चित्रकारी करने में, संगीत में, कोई वाद्य-यंत्र बजाने में, कविता लिखने में, खेलने में, सही ढंग का खाना खाने में, ठीक तरह के कपड़े पहनने में हम रुचि लेते हैं, यदि संध्या और भोर के आकाश को देखने में, पेड़-पौधों के सौंदर्य को देखने में हमें रुचि है, और हमारा मन उस सबका आनंद ले सकता है, जो कि शिक्षा का अंग ही है—और इस प्रकार सृजनात्मक रूप से आनंद उठा सकता है, तब सेक्स कोई भद्दी समस्या नहीं बनती। पर चूंकि हमें इन सब चीजों को सृजनात्मक तरीके से देखने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाता इसलिए सेक्स हमारे लिए भयंकर दुःस्वप्न बन जाता है।

मुझे पूरी आशा है कि यहां उपस्थित बड़े लोग भी सुन रहे हैं। क्योंकि अंततः शिक्षा यही है कि छात्रों को पौधे रोपना और उनकी देखभाल करना सिखाएं, उन्हें अपने हाथों से कुछ बनाने का मौका दें, उन्हें गायों को दुहने दें, उन्हें सैर करने जाने के लिए प्रोत्साहित करें—वे बस हमेशा खेलते ही न रहें। वृक्षों-वनस्पतियों को देखना, चिड़ियों को, आसमान को देखना शिक्षा है, मन को सृजनात्मक रूप से विस्तीर्ण करना शिक्षा है। कुछ मूर्खतापूर्ण और नीरस परीक्षाएं पास करते चले जाना शिक्षा नहीं है।

प्रश्न : जब हम लड़कियों को देखते हैं तो उन्हें प्रभावित करने की चेष्टा करते हैं। हम ऐसा क्यों करते हैं?

कृष्णमूर्ति : मैंने इस प्रश्न का उत्तर दिया था। किसी विपरीत लिंग की ओर, किसी लड़के या लड़की की ओर आपका आकर्षित होना एक स्वाभाविक बात है; न तो इसमें लज्जा की बात है और न इसकी निंदा की जानी चाहिए। जब आप किसी वृक्ष को देखते हैं तो क्या आप

Chapter 14

see a tree, are you not attracted by the tree? When you see a lovely bird—that kingfisher, blue and marvellous in flight—are you not delighted by it? Perhaps you are not because you never look. Last night, there was thunder, lightning, rain. You never looked, did you? You never felt the rain on your face. To see everybody running for shelter, to see how the roads are washed clean and how the leaves are brighter—this also is an attraction.

Unfortunately, we are all girls or boys or grown-ups, insensitive to everything in life except to that one thing, and that becomes an enormous problem afterwards in our life, a problem with which we struggle. We have to be sensitive to everything about us, to those wretched bullocks that are drawing the heavy carts day after day—how thin they are, and how tired the drivers look!—the poor villagers, the disease, the empty stomachs. To be aware of all this is part of education. If you are sensitive to all these things, then you will not want to show off.

Beauty is something only sensitive minds and hearts can find. Mere attraction, mere sensation, though it may be pleasurable at the beginning, does not completely satisfy, so there is pain in it. But if the mind can look at all the things of life, all the depths and heights and qualities of it, if the mind can be sensitive to them, then the attraction of boy and girl has its right place, but without the other, this becomes a very shallow petty affair.

उसकी ओर आकर्षित नहीं होते? जब आप किसी सुंदर पक्षी को, उस उड़ान भर रहे नीले और आकर्षक पक्षी को, उस किंगफिशर को देखते हैं तो क्या आप खुश नहीं होते? शायद आप न होते हों क्योंकि आप कभी इन सब बातों पर ध्यान ही नहीं देते। कल रात मेघ गरज रहे थे, बिजलियां चमक रही थीं, और वर्षा हो रही थी। आपने उसे नहीं देखा होगा, कि देखा था? आपने कभी अपने चेहरे पर वर्षा की बूंदों को महसूस नहीं किया है। वर्षा से बचने के लिए लोग किस तरह इधर-उधर भागते हैं, सड़कें किस तरह धुलकर साफ-सुथरी हो जाती हैं और पत्तियां कैसे चमक उठती हैं—यह सब हमें लुभाता है।

दुर्भाग्य से आप सभी लोग, चाहे लड़कियां हों या लड़के या बड़े लोग हों, उस एक चीज़ के अलावा जीवन की अन्य हर चीज़ के प्रति असंवेदनशील होते हैं, और आगे चलकर वह समस्या आपके लिए भीषण रूप धारण कर लेती है, एक ऐसी समस्या बन जाती है जिससे आप संघर्ष करते रहते हैं। हमें अपने आसपास की हर चीज़ के प्रति संवेदनशील होना होगा, उन निरीह बैलों के प्रति जो दिन-प्रतिदिन भारी गाड़ियों को खींचा करते हैं—देखिए वे कितने क्षीणकाय हैं और उनके गाड़ीवान कितने थके-थके से हैं—गरीबी, बीमारी और भूखे पेट। इन सबके प्रति सजग होना शिक्षा का अंग है। यदि आप इन सब बातों के प्रति संवेदनशील हैं तो आप दूसरों को प्रभावित करने की चेष्टा नहीं करेंगे।

सौंदर्यबोध की क्षमता केवल संवेदनशील मनो और हृदयों में ही हुआ करती है। सतही आकर्षण, क्षणिक उत्तेजना हालांकि शुरू में सुखद लगती है पर यह पूर्ण संतुष्टि नहीं देती, अतः इसमें पीड़ा भी होती है। परंतु यदि मन जीवन की सभी चीज़ों को देख सके, जीवन की समस्त गूढ़ताओं और श्रेष्ठताओं को, इसकी सारी विशिष्टताओं को देख सके, यदि मन उनके प्रति संवेदनशील हो सके तब किसी लड़के और लड़की के बीच का आकर्षण भी अपनी सही जगह खोज लेता है, परंतु इन सबके अभाव में यह एक अत्यंत तुच्छ, छिछला विषय बन जाता है।

Chapter 14

Question: How can we create the feeling of the necessity of manual work?

Krishnamurti: How can we feel that manual work is important? Sir, when you have to do things yourself, the question does not arise. The question arises when somebody else sweeps the floor instead of you. When you have your own physical work to do, day after day, you do not put that question. The villager digging, plowing, does not say, 'How can I make manual labour important?' He has to do it. But we are thankful that we have not got to do manual labour. We, the upper middle class, have withdrawn from all manual labour because we have a little money; and we have the tradition of centuries that the educated men, the Brahmins, the upper class people, have nothing to do with the squalid affair of manual labour. If you live in America, you have to do everything yourself—wash the floors, do the laundry, cook, wash dishes—because there are no servants. There, only the very, very rich can afford servants. They are not called servants, they are called helpers, and they are treated like human beings. But, in this country you have overpopulation and there are thousands for one job. If you have a little money, you employ somebody to do the dirty job, and you gradually withdraw from doing anything with your hands. If you see that, and if you see the importance of doing something with your hands, then you will naturally do it. The mentality of the so-called educated people, whether they are clerks or high officials, is the same—mediocre, petty, small.

प्रश्न : हम अपने भीतर यह भावना कैसे जगाएं कि शारीरिक कार्य करना भी महत्त्वपूर्ण है?

कृष्णमूर्ति : हम कैसे महसूस करें कि शारीरिक श्रम महत्त्वपूर्ण है? महोदय, जब आपको अपने लिए ऐसे कई कार्य स्वयं ही करने होते हैं तो यह प्रश्न आपके सामने नहीं होता। यह प्रश्न तब ही उठता है जब आपके स्थान पर कोई और व्यक्ति फर्श की सफाई कर रहा हो। जब आपको रोज, हर दिन ही, अपनी व्यक्तिगत ज़रूरतों के सारे काम खुद ही करने पड़ते हों तो आप यह प्रश्न नहीं पूछते हैं। मिट्टी खोदनेवाला, हल चलानेवाला ग्रामीण कभी यह नहीं कहता कि मैं शारीरिक श्रम का महत्त्व कैसे समझूं। उसे तो यह सब करना ही पड़ता है। परंतु हम इतने किस्मतवाले हैं कि हमें अपने हाथों से कोई काम नहीं करना पड़ता। हम उच्च मध्य-वर्ग के लोगों ने अपने आपको सारे शारीरिक श्रमों से मुक्त कर लिया है, क्योंकि हमारे पास थोड़ा-बहुत पैसा है, और शताब्दियों से हमारी यही परंपरा रही है कि शिक्षित वर्ग के लोगों, ब्राह्मणों, ऊंची जातियों के लोगों को शारीरिक श्रम से, उन निकृष्ट समझे जाने वाले कार्यों से मुक्त रखा जाए जिन्हें दूसरे लोग कर सकते हैं। यदि आप अमेरिका में रहते हैं तो आपको सभी काम, फर्श धोना, कपड़े धोना, भोजन तैयार करना, बर्तन साफ करना आदि अपने ही हाथों से करना होता है क्योंकि वहां इन कामों को करने वाले नौकर नहीं होते हैं। वहां पर केवल अत्यंत धनी लोग ही नौकरों को रख सकते हैं। और उन्हें भी नौकर न कहकर सहायक कहा जाता है, और उनके साथ अपने जैसा मनुष्य समझकर व्यवहार किया जाता है। किंतु इस देश में जनसंख्या इतनी अधिक है कि एक नौकरी पाने के लिए हजारों उम्मीदवार होते हैं। यदि आपके पास थोड़ा-बहुत पैसा है तो आप निकृष्ट समझे जाने वाले कार्यों को करने के लिए कोई नौकर रख लेते हैं, और धीरे-धीरे अपने हाथों से किये जानेवाले सभी कार्यों से खुद को मुक्त कर लेते हैं। यदि आप यह समझते हैं, और यदि आप यह भी देख पाते हैं कि अपने हाथों से काम करने का भी अपना महत्त्व है, तो फिर आप स्वाभाविक रूप से स्वयं ही अपने कुछ काम करना चाहेंगे। तथाकथित शिक्षित लोग, चाहे वे क्लर्क हों या उच्च अधिकारी, लकीर के फकीर,

Chapter 14

संकीर्ण और क्षुद्र मानसिकता लिए होते हैं।

Those people who refuse to touch the earth, to tend the flowers, do not know what they miss. If you really dig into the garden and plant, see things grow, milk a cow, look after chickens, then something happens to you; there is an astonishing richness in it. Those who have no touch with the earth miss a great deal. Try to have a garden of your own, plant a tree of your own, do it, organize it; then you will see what will happen to you inwardly. It gives you a sense of release, beauty, the love of the earth, of the little worms inside the earth. But unfortunately, we do not know that feeling, nor do we know the feeling of sitting still and actually looking at something. We know none of these inward riches, and not knowing, we acquire superficial, transient riches.

वे लोग जो मिट्टी को छूना तक पसंद नहीं करते, जो फूलों की देखभाल नहीं कर सकते, यह भी नहीं जानते कि वे क्या खो रहे हैं। यदि आप सचमुच बगीचे में जाकर जमीन खो दें, उसमें पौधे लगाएं और देखें कि वे कैसे बढ़ते हैं, यदि आप गायों को दुहें, मुर्गियों और चूड़ों की देखभाल करें, तो आपके भीतर कुछ नया घटित होगा, एक अद्भुत संपन्नता महसूस होगी। मिट्टी से जिनका संपर्क नहीं होता वे बहुत कुछ खो देते हैं। आप अपना बगीचा लगाइए, कोई पौधा खुद लगाइए, यह सब कीजिए, उसकी देखरेख करिए तो आप अनुभव करेंगे कि आपके भीतर क्या कुछ हो रहा है। यह आपको विश्रान्ति की अनुभूति देगा, आपमें सौंदर्य की भावना जगाएगा, धरती के प्रति, धरती के भीतर जी रहे छोटे-छोटे कीड़ों-मकौड़ों के प्रति आपमें स्नेह उत्पन्न करेगा। किंतु दुर्भाग्यवश हम उस भावना से अछूते हैं, और हमें यह भी पता नहीं है कि शांतिपूर्वक बैठना और किसी चीज़ को ठीक से निहारना क्या होता है। हमें अपनी इन आंतरिक समृद्धियों के बारे में कुछ भी पता नहीं होता और चूंकि हम उन्हें नहीं जानते इसीलिए सतही, क्षणिक सुखों के पीछे भागते हैं।

Question: What is the sun?

प्रश्न : सूर्य क्या है?

Krishnamurti: Have you asked your teacher? The sun is, according to scientists, a ball of fire, and it gives you heat, light, strength, everything. Why don't you ask your teachers about it?

कृष्णमूर्ति : क्या आपने अपने शिक्षक से यह प्रश्न पूछा? वैज्ञानिकों के अनुसार सूर्य आग का गोला है और इससे हमें ऊष्मा, प्रकाश, शक्ति, सब कुछ प्राप्त होता है। आप अपने शिक्षकों से इस बारे में क्यों नहीं पूछते?

Question: How can one be satisfied with what one is?

प्रश्न : मनुष्य जो कुछ है उससे संतुष्ट कैसे रह सकता है?

Krishnamurti: The thing is very simple if you listen to what I am saying. Please listen carefully. Dissatisfaction comes when there is comparison. When you see somebody else having more and you having less, and you compare yourself with that other person, then dissatisfaction comes, but if

कृष्णमूर्ति : मैं जो कह रहा हूँ उसे यदि आप ध्यानपूर्वक सुनें तो यह बहुत आसान है। कृपया ध्यान से सुनिये। असंतोष तब पैदा होता है जब तुलना की जाती है। जब आप यह देखते हैं कि किसी व्यक्ति के पास अधिक चीज़ें हैं और आपके पास कम हैं और उस व्यक्ति से आप अपनी तुलना करते हैं तो असंतोष पैदा होता है किंतु यदि आप अपनी तुलना ही नहीं करते हैं तो कोई समस्या ही नहीं होती। परंतु तुलना न

Chapter 14

you do not compare, then there is no problem. But not to compare requires a great deal of interest and understanding because all our education, all our training is based on comparison—‘That boy is not as good as you;s’ ‘You are not so clever as that boy,’ and so on. Then you struggle, and the other boy struggles also. So we keep up this game of constant comparison and struggle. But if you love the thing which you are doing, you do it because you love it, and not because somebody else is doing it better than you;s or you are doing it better than somebody else. When you make no comparison of any kind, then the thing that you are doing, that itself, begins to produce its own depths, its own heights.

Question: Why can't we see the sun?

Krishnamurti: Because it is too bright. You cannot look at an electric lamp if it is a powerful lamp. The eyes are too sensitive.

January 21, 1954

करना तब ही संभव होता है जब गहरी अभिरुचि और समझ भीतर हो क्योंकि हमारी समस्त शिक्षा, हमारा सारा प्रशिक्षण, तुलना पर ही आधारित है--‘वह लड़का तुम्हारे जितना अच्छा नहीं है’, ‘तुम उस लड़के की तरह होशियार नहीं हो’ आदि। तब आप संघर्ष करने लगते हैं और वह दूसरा लड़का भी संघर्ष करने लगता है। इस तरह लगातार तुलना और संघर्ष करने का यह खेल हम जारी रखते हैं। लेकिन आप जो कर रहे हैं उससे यदि आपको लगाव है तो उसे आप केवल इसलिए करते हैं कि उस कार्य से आपको प्रेम है, और इसलिए नहीं कि कोई दूसरा इसे आपसे बेहतर ढंग से कर रहा है या आप इसे अधिक अच्छी तरह से कर सकते हैं। जब आप किसी प्रकार की तुलना नहीं करते तो आप जो कुछ भी कर रहे हों वह कार्य स्वयं ही अपनी गूढ़ताएं, अपनी उत्कृष्टताएं आपके सामने उद्घाटित कर देता है।

प्रश्न : हम सूर्य को क्यों नहीं देख पाते?

कृष्णमूर्ति : क्योंकि यह बहुत तेज चमकता है। बिजली का कोई बल्ब यदि बहुत तेज रोशनी देता है, तो उसे भी देख पाना आपके लिए मुमकिन नहीं होता। आंखें बहुत संवेदनशील होती हैं।

२१ जनवरी, १९५४